# 19वीं शती में मुस्लिम धार्मिक चेतना

**डॉ. कृष्ण अली अलवर्ट**

19वीं शती का काल मुस्लिम समाज के लिए उत्साहवर्धक नहीं था। वस्तुतः मुगल साम्राज्य के विघटन के पश्चात् देश की राजनीतिक एकता छिन्न–भिन्न हो गई और केंद्रीय शक्ति के अभाव में बहुत से स्थानीय शासक उत्पन्न हो गए। मुगल साम्राज्य के पराभव के पश्चात् मराठों तथा राजपूतों के सशक्त राज्य अस्तित्व में आने लगे। लेकिन इसी समय 18 वीं शती के प्रारंभ में यूरोप निवासियों का पूर्वी एशिया के देशों में व्यापार के लिए पर्दापण हुआ। अंग्रेजों ने क्रमशः भारत से अन्य यूरोपीय जातियों को निकाल दिया और स्वयं यहां के भू–स्वामी बन गए। 19वीं शती के पूर्वार्द्ध का राजनीतिक इतिहास ईस्ट इंडिया के विस्तार तथा इंग्लैंड द्वारा भारतीय देश के शासन का इतिहास है। राजनीतिक दृष्टि से एक के बाद दूसरे मुसलमानी राज्य कंपनी द्वारा समाप्त कर दिए गए। सन् 1843 में सिंध, सन् 1856 में अवध तथा 1857 में मुगल साम्राज्य के अंतिम प्रतिनिधि बहादुर शाह के प्रभुत्व की समाप्ति कर दी गई। उत्तर भारत जिसने निकट में मुगलों का शौर्य देखा था, इस समय तक अंग्रेज भारत के अंतर्गत आ चुका था। ऐसी स्थिति में मुसलमान समाज और धर्म के लिए संकट का होना स्वाभाविक ही था।